।। हरिः शरणम्।।

'मानव सेवा संघ' का अमूल्य साहित्य

१. साधन–निधि
२. जीवन–पथ
३. साधन–तत्त्व
४. मानव–दर्शन
५. मानवकी मांग
६. मूक सत्संग तथा नित्ययोग
७. दुःखका प्रभाव
८. सत्संग और साधन
९. सन्तवाणी, भाग–१ (सफलता की कुंजी)
१०. सन्तवाणी, भाग–२
११. सन्तवाणी, भाग–३
१२. सन्तवाणी, भाग–४
१३. सन्तवाणी, भाग–५ (क)
१४. सन्तवाणी, भाग–५ (ख)
१५. सन्तवाणी, भाग–६
१६. सन्तवाणी ,भाग–७
१७. सन्तवाणी, भाग–८
१८. प्रश्नोत्तरी (सन्तवाणी)
१९. सन्त–समागम, भाग–१
२०. सन्त–समागम, भाग–२
२१. सन्त–समागम, भाग–३
२२. सन्त–सौरभ (सन्तवाणी)
२३. सन्त–उद्‌बोधन
२४. सन्त–पत्रावली, भाग–१
२५. सन्त–पत्रावली, भाग–२
२६. सन्त–पत्रावली, भाग–३
२७. पाथेय, भाग–१
२८. पाथेय, भाग–२
२९. जीवन–दर्शन, भाग–१
३०. जीवन–दर्शन, भाग–२
३१. प्रेरणा–पथ
३२. साधन–त्रिवेणी
३३. दर्शन और नीति
३४. चित्तशुद्धि, भाग–१
३५. चित्तशुद्धि, भाग–२
३६. सन्त–जीवन–दर्पण
३७. मंगलमय विधान
३८. मानवताके मूल सिद्धान्त
३९. 'मैं' की खोज
४०. **क्रान्तिकारी सन्तवाणी** ('मानव सेवा संघ' के प्रवर्तक ब्रह्मलीन पूज्यपाद स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराजके ढाई हजारसे अधिक अनमोल वचन)
४१. **A Saint's call to Mankind**
४२. **Sadhna-Spotlight by a saint**
४३. **Ascent Triconfluent**
४४. जीवन–विवेचन, भाग–१ (क)
४५. जीवन–विवेचन, भाग–१(ख)
४६. जीवन–विवेचन, भाग–२
४७. जीवन–विवेचन, भाग–३
४८. जीवन–विवेचन, भाग–४
४९. जीवन–विवेचन, भाग–५
५०. जीवन–विवेचन, भाग–६ (क)
५१. जीवन–विवेचन, भाग–६ (ख)
५२. जीवन–विवेचन, भाग–७ (क)
५३. जीवन–विवेचन, भाग–७ (ख)
५४. पथ–प्रदीप
५५. प्रार्थना तथा पद
५६. 'मानव सेवा संघ' का परिचय

मिलनेका पता–

मानव सेवा संघ, वृन्दावन –२८११२१; फोन –(०५६५) २४४२७७८